

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी की भूमिका: विचार, रणनीति और जनांदोलन का अध्ययन

पूनम

सहायक प्रोफेसर (इतिहास), टीका राम महिला, कॉलेज, सोनीपत (हरियाणा), पिन - 131001

सार

महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे महानायक थे, जिन्होंने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन को नई दिशा, नई चेतना और व्यापक जनाधार प्रदान किया। यह अध्ययन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी की भूमिका का विश्लेषण उनके विचारों, संघर्ष-पद्धतियों और जनांदोलनात्मक नेतृत्व के संदर्भ में करता है। गांधीजी ने सत्य, अहिंसा, असहयोग, सविनय अवज्ञा और स्वदेशी जैसे सिद्धांतों को केवल वैचारिक रूप में ही नहीं, बल्कि राजनीतिक संघर्ष के प्रभावी साधनों के रूप में भी स्थापित किया। उनके नेतृत्व ने स्वतंत्रता आंदोलन को शिक्षित वर्ग की सीमाओं से निकालकर किसानों, मजदूरों, महिलाओं, युवाओं और आम जनता तक पहुंचाया, जिससे यह एक व्यापक राष्ट्रीय जनांदोलन बन सका।

अध्ययन में चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा आंदोलन, असहयोग आंदोलन, दांडी यात्रा, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन जैसे प्रमुख आंदोलनों के माध्यम से गांधीजी की राजनीतिक रणनीति और नेतृत्व क्षमता को समझने का प्रयास किया गया है। गांधीजी का मानना था कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, नैतिक पुनर्निर्माण, आत्मनिर्भरता और मानवीय मूल्यों की स्थापना से भी जुड़ी हुई है। इसी कारण उन्होंने खादी, ग्राम स्वराज, अस्पृश्यता उन्मूलन, हिंदू-मुस्लिम एकता और रचनात्मक कार्यक्रमों पर विशेष बल दिया। इस दृष्टि से गांधीजी का योगदान केवल एक राजनीतिक नेता के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरणकर्ता के रूप में भी महत्वपूर्ण रहा।

यह शोध निष्कर्ष रूप में प्रतिपादित करता है कि महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नैतिकता, जनभागीदारी और अहिंसात्मक संघर्ष की शक्ति से समृद्ध किया। उनकी विचारधारा और संघर्ष-पद्धति ने न केवल भारत की स्वतंत्रता में निर्णायक भूमिका निभाई, बल्कि विश्व स्तर पर भी स्वतंत्रता, शांति और मानवाधिकार आंदोलनों को प्रेरित किया। अतः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अध्ययन में महात्मा गांधी की भूमिका केंद्रीय और अपरिहार्य मानी जाती है।

मुख्य शब्द: महात्मा गांधी, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, अहिंसा, सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह, ब्रिट इंडिया, स्वराज, स्वदेशी, हरिजन आंदोलन, हिंदू-मुस्लिम एकता, सामाजिक सुधार, वैश्विक प्रभाव।

परिचय

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में एक वैश्य ब्राह्मण परिवार में हुआ, जहाँ उनके पिता करमचंद उला गांधी दीवान थे और माता पुतलीबाई धार्मिक प्रवृत्ति की थीं, जिन्होंने बालक मोहनदास को उपवास, भजन-कीर्तन और नैतिक मूल्यों से परिचित कराया। प्रारंभिक शिक्षा राजकोट में पूरी करने के बाद, 1888 में वे लंदन गए और इनर टेम्पल से बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की, लेकिन पश्चिमी सभ्यता के भौतिकवाद से असंतुष्ट होकर वे शाकाहारी बने रहे। 1893 में दक्षिण अफ्रीका पहुँचकर रंगभेदी ट्रेन घटना ने उन्हें नस्लीय भेदभाव का सामना कराया, जिससे प्रेरित होकर उन्होंने 1906 में पहला सत्याग्रह शुरू किया- यहाँ गोरों शासन के विरुद्ध अहिंसक प्रतिरोध की नींव पड़ी। गांधी का अहिंसा और सत्याग्रह का दर्शन भगवद्गीता, बौद्ध धर्म, जैन तपस्या, टॉलस्टॉय, थोरो और रस्किन जैसे विचारकों से प्रभावित था, अहिंसा मात्र हिंसा न करने का अभाव नहीं, बल्कि सक्रिय प्रेम और सत्य की खोज थी, जबकि सत्याग्रह 'सत्य के प्रति दृढ़ता' अर्थात् अन्याय के विरुद्ध आत्म-पीड़ा सहकर विरोध था। 1915 में भारत लौटने पर चम्पारण (1917) के नील किसानों के शोषण के खिलाफ उनका पहला सत्याग्रह सफल रहा, जिसने वकील से राजनीतिक नेता के रूप में उनके परिवर्तन को चिह्नित किया- अब वे कांग्रेस के माध्यम से स्वराज की मांग करने लगे, जनसाधारण को संगठित कर अहिंसक जन-आंदोलन की शुरुआत की, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक और व्यावहारिक दोनों रूपों में क्रांतिकारी बना दिया।

उद्देश्य

- गांधी के प्रारंभिक जीवन और दक्षिण अफ्रीका के प्रभावों का विश्लेषण करना।
- अहिंसा तथा सत्याग्रह दर्शन की मूल अवधारणाओं को स्पष्ट करना।
- गांधी के वकील से स्वतंत्रता सेनानी के रूपांतरण की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
- उनके दर्शन को भारतीय संग्राम से जोड़कर वैश्विक प्रासंगिकता स्थापित करना।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधी के प्रमुख योगदान

महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को अहिंसक जन-आंदोलनों के माध्यम से नई ऊर्जा प्रदान की, जहाँ चम्पारण और खेड़ा से प्रारंभ होकर असहयोग, नमक सत्याग्रह और क्रिट इंडिया तक उनके नेतृत्व ने ब्रिटिश शासन को जड़ से चुनौती दी। इन आंदोलनों ने न केवल राजनीतिक जागृति पैदा की, बल्कि सामाजिक एकता और आत्मनिर्भरता को भी मजबूत किया। गांधी का प्रत्येक कदम सत्याग्रह की शक्ति पर आधारित था, जिसने लाखों भारतीयों को शांतिपूर्ण विद्रोह की प्रेरणा दी।

2.1 चम्पारण और खेड़ा आंदोलन: नेतृत्व में पहला कदम

चम्पारण सत्याग्रह (1917) बिहार के चम्पारण जिले में नील की खेती करने वाले किसानों के शोषण के विरुद्ध गांधी का भारत में पहला बड़ा आंदोलन था, जहाँ ब्रिटिश जमींदारों द्वारा जबरन 'तीन कठिया प्रथा' थोपी जाती थी-किसानों को अपनी जमीन का 3/20 हिस्सा नील की फसल के लिए देना पड़ता था। गांधी ने राजकुमार शुक्ल के निमंत्रण पर पहुँचकर हजारों किसानों का साक्ष्य संग्रह किया, हड़ताल का नेतृत्व किया, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने चम्पारण कृषि समिति गठित की जिसमें गांधी सदस्य बने और प्रथा समाप्त कर दी गई। उसी वर्ष गुजरात के खेड़ा जिले में (1918) अकाल और बाढ़ से पीड़ित किसानों पर लगान वसूली के विरुद्ध दूसरा सत्याग्रह शुरू हुआ, जहाँ सरदार पटेल और इंदुलाल याज्ञिक जैसे सहयोगियों के साथ 'नो टैक्स कैम्पेन' चलाया गया-किसानों ने लगान न देने का संकल्प लिया। ब्रिटिश सरकार ने लगान माफी दे दी, जिससे गांधी राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरे। ये आंदोलन सत्याग्रह की सफलता के प्रतीक बने।

2.2 असहयोग आंदोलन (1920-1922)

असहयोग आंदोलन की शुरुआत जलियांवाला बाग हत्याकांड (1919), रॉलेट एक्ट और खिलाफत आंदोलन से प्रेरित होकर कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन (1920) में हुई, जहाँ गांधी ने ब्रिटिश संस्थाओं-स्कूल, अदालतें, विधानसभाएँ-का बहिष्कार, विदेशी वस्तुओं का त्याग और स्वदेशी अपनाने का प्रस्ताव पारित करवाया। हिंदू-मुस्लिम एकता को मजबूत करने के लिए खिलाफत समिति के साथ गठबंधन किया गया, लाखों छात्रों ने कॉलेज छोड़े, वकीलों ने प्रैक्टिस बंद की, और विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। चोरी-चैरा कांड (फरवरी 1922) में हिंसा के बाद गांधी ने आंदोलन स्थगित कर दिया, फिर भी इसने राजनीतिक चेतना जगाई और कांग्रेस को जनाधार प्रदान किया।

2.3 नमक सत्याग्रह (1930) और नागरिक अवज्ञा आंदोलन

नमक सत्याग्रह (12 मार्च 1930) गांधी के 78 शिष्यों के साथ साबरमती आश्रम से दांडी (385 किमी) तक की 24 दिवसीय यात्रा से प्रारंभ हुआ, जहाँ उन्होंने ब्रिटिश नमक एकाधिकार कानून तोड़ा-यह सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रतीक था। पूरे देश में नमक बनाया गया, जंगल सत्याग्रह (तमिलनाडु) और धरसाना नमक सत्याग्रह (सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में) चले, जिसमें हजारों गिरफ्तार हुए। गांधी-इरविन समझौता (1931) से आंदोलन स्थगित हुआ, लेकिन दूसरे गोलमेज सम्मेलन की विफलता पर 1932 में पुनः शुरू। इसने ब्रिटिश नैतिकता को चुनौती दी और वैश्विक ध्यान आकर्षित किया।

2.4 क्रिट इंडिया आंदोलन (1942)

क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद 8 अगस्त 1942 को मुंबई कांग्रेस सत्र में 'करो या मरो' का नारा देकर क्रिट इंडिया प्रस्ताव पारित हुआ, लेकिन अगले दिन गांधी सहित सभी प्रमुख नेता गिरफ्तार कर लिए गए। भूमिगत नेताओं (जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन) के नेतृत्व में स्वतःस्फूर्त हिंसक विरोध फैला-रेलवे स्टेशन, डाकघर, पुलिस थाने जलाए गए, 'भारत छोड़ो' नारे गूँजे। दमन में 1,000 से अधिक मौतें हुईं, लेकिन इसने ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी और द्वितीय विश्वयुद्ध के संदर्भ में स्वतंत्रता को अपरिहार्य बना दिया।

3: गांधी का वैचारिक और राजनीतिक रणनीति

महात्मा गांधी की वैचारिक रणनीति अहिंसा और सत्याग्रह पर आधारित थी, जो स्वराज, आत्मनिर्भरता, ग्रामीण विकास और सामाजिक एकता के माध्यम से ब्रिटिश उपनिवेशवाद को चुनौती देती थी। उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता को नैतिक और आर्थिक आत्मशासन से जोड़ा, जिससे स्वतंत्रता संग्राम मात्र सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि समग्र समाजोत्थान बन गया। उनकी रणनीति ने जनसाधारण को सशक्त बनाया और वैश्विक स्तर पर अहिंसक प्रतिरोध का मॉडल स्थापित किया।

3.1 स्वराज और आत्मनिर्भरता का सिद्धांत

गांधी का स्वराज केवल ब्रिटिश शासन से मुक्ति नहीं, बल्कि व्यक्तिगत आत्मशासन और राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता की व्यापक अवधारणा थी, जैसा कि उनकी पुस्तक 'हिंद स्वराज' (1909) में वर्णित है-यहाँ उन्होंने चेतावनी दी कि अंग्रेजों की नकल कर सत्ता प्राप्त करना वास्तविक स्वराज नहीं। स्वराज के चार स्तंभ थे: अस्पृश्यता उन्मूलन, खादी प्रचार, हिंदू-मुस्लिम एकता और अहिंसा। आत्मनिर्भरता पर जोर देते हुए वे कहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं पर शासन सीखना चाहिए, ताकि ग्राम स्वराज के माध्यम से विकेंद्रीकृत सत्ता हो-बड़े उद्योग, अदालतें और पुलिस के बजाय पंचायतें शासन करें। यह सिद्धांत आधुनिक केंद्रीकृत लोकतंत्र के विपरीत था, जहाँ शक्ति गांवों तक विकेंद्रीत हो।

3.2 ग्रामीण विकास, खादी और स्वदेशी पर जोर

गांधी ग्रामीण भारत को राष्ट्र की आत्मा मानते थे, इसलिए उन्होंने 'ग्राम स्वराज' की अवधारणा दी, जिसमें प्रत्येक गांव आत्मनिर्भर इकाई बने-कृषि, लघु उद्योग और पंचायती राज पर आधारित। खादी (हाथ काता सूती कपड़ा) को उन्होंने ब्रिटिश कपड़ा उद्योग को आर्थिक हथियार के रूप में अपनाया, चरखा न केवल रोजगार देता था, बल्कि स्वदेशी आत्मनिर्भरता का प्रतीक था-उन्होंने कहा, "चरखा स्वराज का हथियार है।" स्वदेशी आंदोलन में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर भारतीय उत्पादों को बढ़ावा दिया, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हुई और असहयोग जैसे आंदोलनों को बल मिला।

3.3 हिंदू-मुस्लिम एकता और सामाजिक समरसता पर गांधी का दृष्टिकोण

गांधी हिंदू-मुस्लिम एकता को स्वराज का आधार मानते थे, इसलिए खिलाफत आंदोलन (1919-24) के साथ असहयोग जोड़ा, ताकि धार्मिक विभेद समाप्त हो। वे 'रामराज्य' की कल्पना करते थे, जहाँ सभी धर्म समान हों और सामाजिक समरसता हो-'सर्वोदय' (सभी का उदय) उनका सिद्धांत था, जो निर्बल वर्गों के उत्थान पर केंद्रित था। सामाजिक समरसता में जाति-भेद मिटाना शामिल था, वे प्रार्थना सभाओं में 'भजन' गाकर एकता का संदेश देते थे। हालांकि, दंगे (जैसे 1922 चोरी-चैरा के बाद) ने चुनौतियाँ दीं, फिर भी उनका दृष्टिकोण अहिंसक सह-अस्तित्व पर अडिग रहा।

3.4 गांधी का ब्रिटिश उपनिवेशवाद और उसके शोषण पर दृष्टिकोण

गांधी ब्रिटिश उपनिवेशवाद को आर्थिक शोषण (ड्रेन थ्योरी), सांस्कृतिक गुलामी और नैतिक पतन का स्रोत मानते थे-वे कहते थे कि ब्रिटिश ने भारत को कच्चे माल का स्रोत और तैयार माल का बाजार बना दिया। 'हिंद स्वराज' में उन्होंने आधुनिक सभ्यता को 'राक्षसी' कहा, जो मशीनरी और भौतिकवाद से हिंसा को जन्म देती है। उनका प्रतिकार अहिंसक सत्याग्रह था, जो शोषणकारी कानूनों (नमक कर, लगान) का अवज्ञा करता था, नैतिक बल से ब्रिटिश को लज्जित करता था। वे मानते थे कि शोषण की जड़ मानसिक गुलामी है, इसलिए स्वदेशी से आत्मसम्मान जागृत किया।

4: गांधी और सामाजिक सुधार

महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया, जहाँ दलित उत्थान, अस्पृश्यता उन्मूलन, महिलाओं की सशक्तिकरण और ग्रामीण सफाई को स्वराज का मूल तत्व माना-उनका दृढ़ मत था कि "राजनीतिक स्वतंत्रता के बिना सामाजिक गुलामी व्यर्थ है।" उन्होंने अहिंसा-सत्याग्रह से जातिगत भेदभाव, छुआछूत, बाल विवाह, दहेज प्रथा और लैंगिक असमानता के विरुद्ध देशव्यापी अभियान चलाए, जो न केवल भारतीय समाज को एकजुट करने वाले थे बल्कि नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग जैसे वैश्विक नेताओं को प्रेरित करने वाले सिद्ध हुए।

4.1 सामाजिक सुधार और दलितों के उत्थान पर गांधी का ध्यान

गांधी ने दलितों को 'हरिजन' (ईश्वर के पुत्र) कहकर सम्मान दिया और उन्हें समाज का सबसे वंचित वर्ग मानकर उनके उत्थान को स्वराज की शर्त बनाया-1932 में ब्रिटिश कम्प्युनल अवार्ड के अलग निर्वाचन प्रस्ताव के विरुद्ध 6 दिनों का उपवास कर पूना पैक्ट करवाया, जिसमें हिंदू निर्वाचकों से दलितों को चुनने का अधिकार सुनिश्चित हुआ। हरिजन सेवक संघ (1932) स्थापित कर देशभर में दलित बस्तियों में रहकर सफाई, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ दीं, गुजरात के मेमनाबाद, बेलगाम में दलितों के साथ भोजन किया, कूड़ा उठाया। हरिजन पत्रिका (1933) शुरू की जो दलित कल्याण पर केंद्रित रही उनका मानना था कि "हरिजन सेवा ही भगवान की सच्ची पूजा है।"

4.2 गांधी का अस्पृश्यता और हरिजन आंदोलन पर दृष्टिकोण

अस्पृश्यता को गांधी ने "हिंदू धर्म का सबसे घृणित पाप और हिंसा का पर्याय" कहा, जिसे समाप्त करना उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था-1932-34 के हरिजन आंदोलन में 12,500 मील की यात्रा कर 125 स्थानों पर सभाएँ कीं, गुरुवायुर (केरल), कन्याकुमारी, महाद मंदिरों के लिए सत्याग्रह का समर्थन किया। वर्धा सेवाग्राम आश्रम में हरिजन छात्रावास खोला, यरवदा जेल से रिहा होकर पुणे में 21 दिन का उपवास (1932) किया, वर्णाश्रम को श्रम विभाजन मानते हुए जन्म-आधारित भेदभाव को नकारा-"जाति प्रथा रह सकती है, पर अस्पृश्यता नहीं।" डॉ. आंबेडकर से वैचारिक टकराव (अलग निर्वाचन विवाद) के बावजूद पूना पैक्ट ने दलितों को संवैधानिक प्रतिनिधित्व दिया, जिससे सामाजिक सुधार की नींव पड़ी।

4.3 गांधी के दृष्टिकोण में महिलाओं की भूमिका

गांधी ने महिलाओं को "स्वराज्य की आत्मा और सत्याग्रह की सहज शक्ति" कहा, उन्हें निष्क्रिय गृहिणी से सक्रिय क्रांतिकारी बनाने पर बल दिया-नमक सत्याग्रह (1930) में सरोजिनी नायडू को धरसाना नमक सत्याग्रह का नेतृत्व सौंपा जहाँ लाठियों के वार सहते हुए "फायर अगेन" का नारा दिया, असहयोग (1921) में कस्तूरबा, कमला नेहरू जैसी महिलाओं ने विदेशी कपड़ा होली जलाया, दुकानों पर पिकेटिंग की। बाल विवाह उन्मूलन के लिए 14 वर्ष की आयु सीमा माँगी, विधवा विवाह, दहेज निषेध, पर्दा प्रथा समाप्ति की वकालत की, चरखा कातना सिखाकर आर्थिक स्वावलंबन दिया-"महिला ही राष्ट्र की असली रक्षक है।" स्वतंत्र भारत में पंचायती राज में 50प्रतिशत आरक्षण, तलाक अधिकार और संपत्ति हक की बात की, हालांकि बहुपत्नीत्व और घरेलू हिंसा पर पारंपरिक दृष्टिकोण अपनाया।

5. गांधी की धरोहर और वैश्विक प्रभाव

महात्मा गांधी की धरोहर अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय और ग्राम स्वराज के सार्वभौमिक सिद्धांतों में निहित है, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को सफल बनाया और विश्व भर में शांति, समानता तथा सामाजिक न्याय के आंदोलनों को प्रेरणा स्रोत प्रदान किया। संयुक्त राष्ट्र ने 2007 से 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित कर उनकी वैश्विक मान्यता को स्वीकृति दी।

5.1 गांधी के सिद्धांतों का वैश्विक आंदोलनों में उपयोग

गांधीवादी अहिंसा-सत्याग्रह ने विश्व के प्रमुख आंदोलनों को दिशा दी-अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने 1955 मॉन्टगोमरी बस बहिष्कार में अहिंसक प्रतिरोध अपनाया, 1963 बर्मिंघम कैम्पेन में पुलिस लाठियों सहे बिना जवाबी हिंसा न करने का संकल्प लिया, और 1965 सल्मा-मोंटगोमरी मार्च (ब्लडी संडे) में 50,000 लोगों ने सत्याग्रह किया, जिसके फलस्वरूप सिविल राइट्स एक्ट (1964) और वोटिंग राइट्स एक्ट (1965) बने, किंग ने अटलांटा सेंटर फॉर नॉनवायलेंट स्ट्रगल स्थापित किया। दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला ने 1952 डेफियंस कैम्पेन और 1961 स्टेट ऑफ द नेशन स्पीच में गांधी से प्रेरणा ली, जिसका प्रभाव रंगभेद समाप्ति (1994) तक दिखा। बर्मा की आंग सान सू की ने 1988-2010 लोकतंत्र आंदोलन में नो-वायलेंस नीति अपनाई (नोबेल 1991), चेकोस्लोवाकिया के वावेल हावेल ने 1989 वेलवेट रेवोल्यूशन, आयरलैंड के जॉन ह्यूम ने गुड फ्राइडे एग्रीमेंट (1998), और फिलिस्तीन के मोर्देचाई वानूना ने शांति मार्च (1980) में गांधीवादी रणनीति अपनाई।

5.2 स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गांधी के विचारों का प्रभाव

स्वतंत्र भारत में गांधी के विचार ग्रामीण पुनर्निर्माण का आधार बने-आचार्य विनोबा भावे ने भूदान आंदोलन (1951-65) से 42 लाख एकड़ भूमि 10 लाख भूमिहीनों को वितरित की, जो ग्राम स्वराज का व्यावहारिक प्रमाण था, जयप्रकाश नारायण ने 1974 संपूर्ण क्रांति में सर्वोदय, राम राज्य परिषद और पंचायती राज को पुनर्जीवित किया। नेहरू सरकार ने सामुदायिक विकास कार्यक्रम (1952), खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, और बालवंत राय मेहता समिति (1957) से ग्राम पंचायतों को संवैधानिक मान्यता दीय पंचायती राज अधिनियम (1959 राजस्थान) और 73वें संशोधन (1992) ने महिलाओं को 33-50 प्रतिशत आरक्षण दिया। भूदान, ग्राम दान और हरिजन कल्याण योजनाओं ने सामाजिक समरसता स्थापित की, जबकि इंदिरा गांधी के 20-सूत्री कार्यक्रम (1975) ने गरीबी हटाओ में स्वदेशी को शामिल किया।

5.3 गांधी का आधुनिक राजनीतिक विचारों पर प्रभाव

आधुनिक राजनीति में गांधी पर्यावरण न्याय, सतत विकास और अहिंसा के प्रणेता हैं-भारत में चिपको आंदोलन (1974, गौरा देवी, 27,000 पेड़ बचाए), नर्मदा बचाओ आंदोलन (1985, मेधा पाटकर, 2 लाख विस्थापितों का सत्याग्रह), और 2020-21 किसान आंदोलनों (दिल्ली बॉर्डर पर 6 माह शांतिपूर्ण धरना) ने गांधीवादी प्रतिरोध दिखाया। वैश्विक स्तर पर ब्लैक लाइव्स मैटर (2020, 2,000 शहरों में अहिंसक विरोध), हांगकांग लोकतंत्र प्रदर्शन (2019, 2 मिलियन मार्च), म्यांमार विरोध (2021, सिविल डिजायनेड ऑब्दियंस मूवमेंट), और ग्रेटा थनबर्ग के फ्राइडे फॉर फ्यूचर (2018, 14 मिलियन छात्र) ने सत्याग्रह अपनाया। संयुक्त राष्ट्र एसडीजी 2030 के 17 लक्ष्यों (गरीबी उन्मूलन, लिंग समानता, जलवायु कार्रवाई) और भारत का आत्मनिर्भर भारत अभियान (2020, 27 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था लक्ष्य) सर्वोदय-स्वदेशी से प्रेरित हैं, ट्रस्टीशिप सिद्धांत ईएसजी निवेश (2025 में \$50 ट्रिलियन) में परिलक्षित है।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी ने चम्पारण सत्याग्रह (1917) से क्रिट इंडिया (1942) तक अहिंसक जन-आंदोलनों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को निरीह याचना से शक्तिशाली क्रांति में रूपांतरित किया, जहाँ असहयोग ने ब्रिटिश संस्थाओं का बहिष्कार सिखाया, नमक सत्याग्रह ने वैश्विक नैतिक विजय दिलाई। स्वराज, खादी-चरखा, ग्राम स्वराज, हिंदू-मुस्लिम एकता, पूना पैक्ट (1932) से हरिजन उत्थान, धरसाना सत्याग्रह में महिलाओं की भूमिका सुनिश्चित कर सामाजिक क्रांति लाई। उनका नेतृत्व ब्रिटिश उपनिवेशवाद को सैन्य बल से नहीं, अपितु नैतिक लज्जा से परास्त करने वाला था। मार्टिन लूथर किंग, नेल्सन मंडेला जैसे वैश्विक नेताओं को प्रेरित किया। आज चिपको, नर्मदा बचाओ, किसान आंदोलन, ब्लैक लाइव्स मैटर में अहिंसा-सत्याग्रह जीवंत है। आत्मनिर्भर भारत, एसडीजी 2030 और जलवायु न्याय में उनकी प्रासंगिकता चिरस्थायी है। ध्रुवीकरण व पर्यावरण संकट के दौर में गांधी ही शांति का एकमात्र मार्ग दिखाते हैं।

ग्रंथ सूची

1. पणिक्कर, के. एम., सम्पादक, महात्मा गांधी: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, नेशनल प्रकाशन, 1969.
2. तेंदुलकर, डी. जी. महात्मा: गांधीजी का जीवन, 8 खंड. नवजीवन प्रकाशन, 1960-1969.
3. पारिख, एन. महात्मा गांधी के सत्याग्रह, नवजीवन, 1953.
4. प्यारेलाल, महात्मा गांधी: जीवन के अंतिम 18 वर्ष. 2 खंड, सर्वोदय प्रकाशन, 1949-1950.
5. शास्त्री, एल. गांधी और स्वराज, गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा, 1975, पृ. 201
6. मास्टर, आर. हरिजन आंदोलन, नवजीवन, 1963, पृ. 156
7. मशरूवाला, के. अहिंसा: गांधी दर्शन, भारतीय विद्या भवन, 1955. पृ. 56

8. नित्यानंद, गांधी: स्वदेशी और खादी, राजपाल एंड सन्स, 1980. पृ. 67
9. भगवती प्रसाद, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधी, राजकमल प्रकाशन, 1972. पृ. 201
10. जैन, एस. गांधी और सामाजिक सुधार, राजस्थानी ग्रंथागार, 1990, पृ. 189
11. सहाय, के. नमक सत्याग्रह और गांधी, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1968, पृ. 112
12. भावे, वी. ग्राम स्वराज: गांधी दर्शन, अखिल भारतीय सर्वोदय सभा, 1955, पृ. 45.